जनार्दन कोष ।

[प्रथम भाग]

सिन्धुदेशीय डेराख्य वास्तव्य धन्यधन कुलावतंस
श्रीयुत पण्डित टिकनलालात्मज पं॰ भगवद्दत्त-
शर्म्मा ने निर्माण किया ।

सं० १९७४ शकः १८३८ ।

लाहौर

लाला मोतीलाल मैनेजर के अधिकार से
मुफ़ीद-आम प्रैस में छपा ।

॥ आघोषणा ॥

श्रीमन्तः ' "भ्या ! प्रचुर अरविन्द काव्य कोषों के मकरन्द शब्दों · मलिन्द होकर उद्गीर्ण यह मधु कोष 'त्रासिन् प्रेयस् कनीयस् स्वीय सहोदर के अटल नाम पर उपस्थित किया, यह कोष प्रायः पाठशाला के विद्यार्थियों के लिये वहुत ही उपयोगी है, जिसके दृष्टिमात्र से प्रचलित शब्दों का पूर्ण रीति से भान हो जाता है, बहुधा इस कोष में यौगिक शब्द इस लिये दिये हैं कि कहीं विद्यार्थियों को कठिनता न दीख पड़े, इसके पढ़ने से स्वयं शब्दार्थज्ञ हो जाएं, श्रीमन्तः !

यत्र कुत्राप्यनौचित्यं दृश्यते वै महात्मभिः ।
क्षन्तव्योयंसदादासोऽपार्थकपद लेखकः ॥

इत्यभ्यर्थयतिक्षमां डेरागाजी खान नगर निवासी,
श्चद्रशर्म्मो भगवद्दत्तः ।

A. S. M. स्कूल, भूपालवाला
जिला सियालकोट

॥ समर्पण ॥

कोष का प्रथम भाग श्रीयुत मान्यवर मुख्याध्यापक (हैड मास्टर) ल० हरिराम जी बी० ए० के समर्पण करता हूं, आशा है कि महानुभाव इस पुस्तक को स्वीकार करेंगे ॥

आप का कृपाकांक्षी डेरा गाजीखान निवासी

पं० भगवत्तदत्त शर्मा A. S. M. स्कूल

भूपालवाला जिला सियालकोट

॥ श्रीः ॥

वेद-वेदाङ्ग-वक्तारं भर्त्तारं सम्पदां भुवि ।
कर्त्तारं च भवो-न्नत्याः नौमि तं परमेश्वरम् ॥१॥
देव राजं सदाचार्यं श्रीकृष्णदत्त शास्त्रिणं ।
बालानन्दश्च वेदाङ्गं वन्दे निर्विघ्न शान्तये ॥२॥
ग्रन्थ ग्रन्थान्तरेभ्योहं सारमाकृष्य यत्नतः ।
कोशं मिश्रित भाषायां कुर्वे छात्रहिताय वै ॥३॥

सृष्टि वर्णन

प्रभु	पु०	परमात्मा
परमाणु[1]	,,	बरीक किणके
पृथिवी	स्त्री०	ज़मीन
अप् (ब.)	,,	जल
तेजस्	न०	तेज-प्रकाश
वायु	पु०	हवा
आकाश	,,	आसमान
काल	,,	समय

(नोट) १ जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजस्तस्य षष्ठितमोंशश्च परमाणुः स उच्यते ॥

दिक्	स्त्री०	दिशा
प्राची	,,	पूर्व दिशा
अवाची	,,	दक्षिण दिशा
प्रतीची	,,	पश्चिम दिशा
उदीची	,,	उत्तर दिशा
कोण	पु०	कोन का नाम है
ईशान कोण	पु०	उत्तर और पूर्व की मध्म दिशा का नाम है।
आग्नेय	,,	पूर्व और दक्षिण की मध्य-दिशा का नाम है।
नैर्ऋत्य	,,	दक्षिण और पश्चिम की मध्य दिशा का नाम है।
वायव्य	,,	पश्चिम और उत्तर दिशा की मध्य कोण का नाम है।
वेद[१]	,,	वेद भगवान
वर्ष	न०	साल
मास	पु०	महीना

(नोट) १ ऋग्वेदः— यजुर्वेदः— सामवेदः—अथर्ववेद अग्नेः ऋग्वेदः, वायोः यजुर्वेदः,, आदित्यात् सामवेदः। अंगिरसोऽथर्ववेदश्चाजायत॥ इति वेदानां प्रकाशाविर्भावः॥

रात्रि	स्त्री	रात
घस्र	पु०	दिन
ऋतु	पु०	मौसम
वसन्त	,,	चैत्र और वैशाख
ग्रीष्म	,,	ज्येष्ट—आषाढ
वर्षा	स्त्री	श्रावण—भाद्रपद
शरत्	,,	आश्विन—कार्तिक
हेमन्त	पु०	मार्ग शीर्ष—पौष
शिशर	न०	माघ फाल्गुण

शरीरांगवर्णन ।

मानव	पु०	मनुष्य—आदमी
वामा	स्त्री	औरत
आकृति	,,	शकल
शिखा	,,	बोदी
केश	पु०	वाल
कुन्तल	,,	टेढे वाल-बुलबल वाल
वेणि	स्त्री	स्त्रियों की गुत
शबरी	,,	कन्यायों की मेएढी
शिरस्	न०	सिर

काकुद्	न०	तालु
मस्तिष्क	,,	ममई, या, दिमाग
ललाट	,,	माथा
भ्रू	स्त्री०	भौंवें
कूर्च	न०	भौंए की मध्य जगह
चक्षुष्	न०	आंख
अपाङ्ग	पु०	पिप्पलियां
अस्रु	न०	आंसू
कपोल	पु०	गण्डस्थल–गल
कर्ण	न०	कान
किट्ट	न०	कान की मैल
नासिका	स्त्री०	नाक
वदन	न०	मुख
ओष्ठ	पु०	होंठ
रद-दन्त	,,	दान्त
हनु	स्त्री०	हनु
जिह्वा	,,	जीभ
जृम्भा[१]	,,	ऊंबासी
छिक्का	,,	छींकना

नोट१ —जृम्भं नपुंसके च-जृम्भम्-जृम्भा ॥

चिबुक[1]	न०	ठोडी
श्मश्रु	,,	दाढी-मूच्छ
ग्रीवा	स्त्री०	गर्दन
स्कन्ध	पु०	कंधा
कक्षा	स्त्री०	कच्छ—या—बगल
बाहु	पु०	भुजा
प्रगड	पु०	(दौ) डौले
कफोणि	स्त्री०	इरक
कर्पर	पु०	गिसनीया-वोणी
मणिबन्ध	पु०	कलाई
हस्त	पु०	हाथ
करभ	पु०	हाथ का पृष्ठ
अंगुलि	स्त्री०	अंगुली
अंगुष्ठ	न०	अंगूठा
तर्जनी[2]	स्त्री०	पहिली अंगुल
मध्यमा	स्त्री०	दूसरी०
अनामिका	स्त्री०	तीसरी०
कनिष्ठका	स्त्री०	चोथी०

१—त्रिबुक-पु० ओष्ठाधो भागे-इति श. चि. ॥

नोट २—अङ्गुष्ठं विना प्रथमा तर्जनी ॥

नख	पु०	नाखून
मुष्टि	स्त्री०	मूठ
तालिका	,,	ताली
चपेटिका	,,	चपेट
दक्षिण	पु०	दहना
वाम	पु०	बायां
पार्श्व	,,	तरफ-या-पासा
कुक्षि	स्त्री०	कुच्छर-या-कुख
हृदय	न०	दिल
यकृत्	,,	कलेजा
जठर	,,	पेट
स्तन	पु०	मम्में
चूचुक[1]	न०	मम्मों का मूंह
नाभि	स्त्री०	दु (धु) न्नी
कटि	,,	कमर
नितम्ब	पु०	पट्ट
पायु	पु०	मल निकलने का स्थान
पर्द	,,	पड़-अधोवायु

(नोट) १ चूचुकम् न. कुचाग्रे चूप पाने बाहुल कादुकः ।
श. चि. ।

शिश्न	,,	मूत्र स्थान
भगा	स्त्री०	स्त्री मूत्र स्थान
वृषण	पु०	अण्डकोश
सक्थि	न०	सथल
जानु	न०	घुटने
जंघा	स्त्री०	टांग
गुल्फ-प्रपद्	पु०	गिट्टा
पार्ष्णि	,,	खुरी वा एड़ी
पाद्	,,	पाऊं
अस्थि	न०	हड्डी
मांस	न० पु०	मास
बल्लूर	त्रि०	सूखा मास
रुधिर	न०	लहु
धमनी	स्त्री०	नाड़ी
त्वक्	,,	त्वचा शरीर का चमरा
पृष्ठ	त्रि०	पीठ
काय	पु०	शरीर

नगर वर्णन.

नगर	न०	शहर
मन्दिर	,,	मन्दिर
गोपीनाथ	पु०	देव-नाम है
राजन्	,,	राजा
सम्राज्	,,	बादशाह
न्यायशाला	स्त्री०	कचहरी
पथिकशाला	,,	मुसाफ़िर खाना
प्रासाद	पु०	राजमहल
अन्तःपुर	न०	रानियों का घर
नगरेश	पु०	डिपटी कमिश्नर
न्यायाध्यक्ष[१]	पु०	जज्ज
निर्ण(तृ) ता[२]	,,	मुन्सिफ़
कराध्यक्ष उपपुरशासक	पु०	तहसीलदार

नोट १—प्राड् विवाक् पु० प्राट् प्रश्नकर्त्ता । प्रच्छतीतिप्राट् विशेषेण वाक् यस्य, वाक् वाणी सरस्वतीत्यमरः, जज्ज इतिकेचित्, अपरेतु प्रश्नसम्बन्धावच्छिन्नत्वादियं विशेषोक्तिर्वाक्, वाग्व्यवहार-विषय इति वदन्ति ।

२—निर्णयकर्त्ता ।

वाक्कील[1]	,,	वकील
कोष	,,	खजाना
कोषाध्यक्ष	,,	खजाञ्ची
दण्डपाशक	,,	सिपाही
दण्डपाशक स्वामिन्	,,	थानेदार
प्रणिधि-गुप्तचर	,,	जासूस
वादिन्	,,	मुद्दई
प्रतिवादिन्	,,	मुद्दालेह
साक्षिन्	,,	गवाह
शुल्क[2]	पु०	मुसूल
शुल्क स्थान	न०	मुसूलो-चुंगी
लेखहार	पु०	चिट्ठीरसान
तस्कर-चौर[3]	,,	चोर

१—वाचं कीलयतीति।

२—शुल्कः पु० न० घट्टादिदेये रक्षानिमित्त रूपे राजभागे, रक्षानिर्वेशोराजभागः शुल्क इत्युक्तः, स्थलजलपथादिनावाणिज्याकारिभ्यो नियतस्थानेषुद्रव्यानुसारेण राजग्राह्यभागे, दान० इ० भा० अ० दृति० श० चि० ॥

नोट ३—चोरयतीतिचोरः, चुरस्तेये।

कारागार	पु० न०	जेलखाना
कौतुकागार	पु० ,,	अजायब घर
जन्त्वागार	पु० ,,	चिड़िया घर
शिबर	न०	छावनी
सेना	स्त्री०	फौज़
सेनानायक	पु०	करनेल
शतघ्नी[1]	स्त्री०	तोप
गुलिका	,,	गोली
भुसुण्डी-एकघ्नी[2]	स्त्री०	बन्दूक
छुरिका	स्त्री०	छुरी
मार्जनी परिष्क(त्त)र्त्ता	पु०	चूड़ा
यन्त्र	न०	कला
यन्त्रालय	पु०	कारख़ाना
वाष्प	न०	भाप
यान	न०	हसवारी
रथ	न० पु०	रथ-बेहली
वायुयान	न०	हवाई जहाज़
वाष्पयान	न०	म टरकार
द्विचक्रिका[3]	स्त्री०	सैकल

१—शतं प्रतिहन्तीति । २ [illegible]कं प्रतिहन्तीति ।

(नोट) ३ द्वेचक्रे यस्याः [illegible]

वाष्पशकटि	,,	रेलगाड़ी
चालनयन्त्र	न०	कांटा
पेषणी	स्त्री०	चक्की
तिलपेषण[२]	पु०	कोल्हू
कूप	पु०	कूंअ
सरस्	न०	तालाब
वापी-दीर्घिका	स्त्री०	बांवली
सागर	पु०	समुद्र
विप्र	पु०	ब्राह्मण
क्षत्रिय	पु०	क्षत्री
वैश्य	पु०	बनिये-कराल
शूद्र	,,	भीवरादि
ब्राह्मणी	स्त्री०	ब्राह्मण की स्त्री
क्षत्रियाणी	स्त्री०	क्षत्री की स्त्री
वैश्या	स्त्री०	वैश्य की स्त्री
शूद्राणी	स्त्री०	शूद्र की स्त्री
श्रेष्ठिन्	पु०	सेठ
वणिक्	पु०	व्यापारी
नापित	पु०	नाई

नोट १—स्त्रीचेत्, तिलपेषणिका ।

क्षुर	पु०	उस्तरा
क्षुरभाण्ड	न०	रछानी
शिल्पकारिन्	पु०	मिस्तरी
रजक	पु०	धोबी
रङ्गकार	पु०	रङ्गरेज़
कुलाल	पु०	कुम्हार
भारवाह	पु०	मजूर, कुली
दास	पु०	भृत्य-नौकर
मल्ल	पु०	पहलवान
मल्लभूमि	स्त्री०	अखारा
सौविदल्ल	पु०	दलाल
उपानह विक्रे (तृ) ता	पु०	मोची
(चर्मकार) क्रे (तृ) ता	पु०	खलीदार
यवन	पु०	मुसल्मान

विश्वविद्यालय वर्णन ।

विश्वविद्यालय	पु०	कालेज
पाठशाला	स्त्री०	स्कूल
रात्रि पाठशाला	स्त्री०	नाईट स्कूल
दशमश्रेणि पा०	स्त्री०	हाईस्कूल

(नोट) १ श्रेणि स्थाने कक्षाया उपयोगोपि कर्त्तव्यः ॥

अष्टमश्रेणि पा०	स्त्री०	मिडल स्कूल
पञ्चमश्रेणि पा०	स्त्री०	प्राईमरी स्कूल
तृतीय श्रेणि पा०	स्त्री०	बराञ्च स्कूल
मुख्याधिष्ठा (तृ) ता	पु०	मैनेजर
मुख्याध्यापक[1]	,,	हैडमास्टर
द्वितीयाध्या०	,,	सैकण्ड मास्टर
तृतीयाध्या०	,,	थर्ड मास्टर
चतुर्थाध्या०	,,	फार्थ मास्टर
पञ्चमाध्या०	,,	फ़िफ़्थ मास्टर
षष्ठमाध्या०	,,	सिक्स मास्टर
इतिहासाध्या०[2]	,,	हिस्टरी मास्टर
भूगोल विद्याध्या०[3]	,,	जागराफिया मास्टर
गणित विद्याध्या०	,,	हिसाब मास्टर
संस्कृताध्या०	पु०	संस्कृत टीचर
यावनी विद्याध्या०	,,	पर्शन टीचर
न्यायाध्या०[4]	,,	साईंस मास्टर
चित्राध्या०	,,	ड्रैङ्ग मास्टर

(नोट) १ मुख्य स्थाने प्रधानोपयोगोपि स्त्रीचेत् मुख्याध्यापिका (२ ऐतिहासिकः। (३) भौगोलिकः।

(नोट) ४ प्रत्यक्षवादिन साङ्ख्याध्यापक इत्यपरे॥

व्यायामाध्या०	पु०	वर्ज़िश मास्टर
लेखक	पु०	क्लर्क
छात्र[1]-विद्यार्थिन्	पु०	स्टूडेण्ट
छात्रप्रधान	पु०	मानीटर
छात्रालय	पु०	बोर्डिंग
पीठ[2]	पु०	चौकी
लेख	पु०	लिखाई
लेखपीठिका	स्त्री०	टेबल मेज़
काष्ठपीठ	पु०	कुरसी
वेत्रासन[3]	न०	कुरसी
द्विच्छात्रपीठिका[4]	स्त्री०	डस्क
पञ्चछात्रपी०	स्त्री०	(वैं) बिञ्च
शय्यापीठिका	स्त्री०	तख्तपोश (श)
अध्यापक लेखकपाट	पु०	बोर्ड
भस्मपाषाण[5] लेखनी	स्त्री०	चाक

(१) छादयति गुरुदोषानिति छात्रः ष्ट्रन् प्रत्ययः ।

(२) धातुपाषाणकाष्ठैश्च पीठं त्रिविध उच्यते इति शब्दचि ।

(३) वेत्रासनम् न० वेत्रनिर्मितासनं, आसन्दीत्यथ वेत्रासन माखन्दीति हेमचन्द्रः । (४) च्छात्रद्वयपीठिका इत्यादि ।

(नोट) ५ भस्म पाषाण वर्तिरिति केचित् ।

लेख शिला	,,	स्लेट
लेखिनी	,,	कलम
धातु लेखनी	,,	हौलडर
लेखनी पेटिका	,,	कलमदान
[१] मसि	,,	स्याई
मसिपात्र	न०	दवात
करगल	,,	कागज़
वृक्षमद	पु०	गूंद
[२] घर्षक	,,	रबर
पुस्तक	न०	किताब
चौलकोष पुस्तक	न०	पाकटबुक
पाठ	पु०	लेसन
[३] अभ्यास	,,	मशक करना
परस्परालाप	,,	कनवर्सेशन
पठन	न०	पढ़ना
स्मृति स्त्री० स्मरण	न०	याद करना
प्रश्न	पु०	सवाल

---

(१) मसिः स्त्री पत्राञ्जने, मसी परिणामे इन् ।

(२) घर्षयति करगल भित्ति तथोक्तः ।

(३) अभ्यसनमभ्यासः ।

उत्तर	न०	जवाब
परीक्षा	स्त्री	इम्तिहान
परीक्षा स्थान	न०	सेण्टर
प्रश्न पत्र	न०	सवाली पेपर
शुल्क	पु० न०	दाखला
कर	पु०	फ़ीस
मासिक	न०	वज़ीफा
पदक	न०	तमगा
पारितोषक[1]	न०	इनाम
प्रार्थनापत्र	न०	अर्ज़ी
परित्याग पत्र	न०	अस्तीफ़ा
भ्रष्टपद	त्रि०	माक़ूफ़
स्वीकार	त्रि०	मनजूर
वेतन	न०	तनख्वाह
अङ्कन	न०	टेढी-वेरा
व्यायाम	पु०	वर्जिश
क्रीड़ा	स्त्री०	खेल
क्रीड़ाङ्गन	न०	ग्रौण्ड
सीमा	स्त्री०	हद्-या-गोल
सीमाध्यक्ष	पु०	गोलकीपर

(नोट) १ पुरस्कार इत्यपि ।

कन्दुक	न०	गेण्ड
किरकिरिका	स्त्री०	किरकिट
यष्टिक्रीड़ा	स्त्री०	हाकी
कन्दुक प्रहार[1] क्रीड़ा	स्त्री०	फूटबाल
कन्दुक क्रीड़ा	स्त्री०	टेन्स
कटुक्रीड़ा	स्त्री०	कवड्डी
पारिक्रमिकाक्रीड़ा	स्त्री०	ओटका शपाकी
विरोध[2] क्रीड़ा	स्त्री०	मैच
धावन	न०	दौड़ना
उच्छुलन	न०	उच्छलना-च्छरप्ये
रज्वाकर्षण	न०	लज-या रस्सी का खचना

आपण वर्णन.

आपण	न०	बाज़ार
हट्ट	पु०	हट्टी
मिष्टान्नक(र्त्तृ)र्त्ता	पु०	हलवाई

(नोट) १—प्रहारः पादप्रहार इति।

२—विशेषेणरोधोऽवरोधनं यस्यां क्रीड़ायां तथोक्ता, प्रत्याम-णिहेत्यपि।

मिष्टान्न	न०	मिठाई
मोदक	न०	लड्डू
पथ्योदन	न०	तोषा
दुग्ध	न०	दूध
दधि	न०	दही
नवनीत	न०	मक्खन
तक्र	न०	छाछ
शर्करा	स्त्री०	शक्कर
सितशर्करा	स्त्री०	खांड·चोनी
कुण्डलिनी[1]	स्त्री०	जलेबी
पूरिका[2]	स्त्री०	पूरी
फेनिका[3]	स्त्री०	फेनी
गुड	पु०	गुड़
मोहनभोग	पु०	मेसू·मोहन थाल
अपूप[4]	पु०	मालपूआ
सन्धान[5]	न०	अचार
मधुर[6] सन्धान	न०	मुरब्बा

नोट १—कुण्डलमस्या अस्तीं वाऽस्ति । २—शष्कुलीत्यन्या । ३—फेनिकेति भा० चि० । ४— अपूपः पिष्टके गोधूमे, न पूयते, पूविशरणे बाहुलकात्पः वकिलोपः । ५—संधीयतेयत्तत् ।

६—मधुरस्य यत्सन्धानं मधुरसन्धाने फलसन्धानमित्यपरे ।

पुष्प[1] सन्धान	न०	गुलकन्द
सक्तु	पु०	सतुवा

भूषण वर्णन.

स्वर्णकार	पु०	सुनारा
निकष	पु०	कसोटी
मणिबन्ध[2]	पु०	कलाई
गुम्फ[3]	पु०	बाजूबन्द
केयूर	न०	बाजूबन्द
स्वर्ण	न०	सोना
रजत	न०	चांदी
कङ्कण	न०	कङ्गन

१—पुष्पाणां पाण्डर्यादीनां यत्सन्धानं तत्पुष्प सन्धानम्।

(नोट) २—मणिबन्धः पु. प्रकोष्ठ पाण्योः सन्धिः जण्टलम-यन्त्राणां घटिका मणि विषयेऽयं मणि बन्धे (कलाई) इति प्रयोगः भाषायां कर्त्तव्यः किमनेन निरुद्ध प्रयोगेन, अस्य मणिबन्ध-स्य संघटनापि सञ्ज्ञा घटीतीति दिक् ॥

स्थाने कर ग्रन्थो--कलाई. २. भा. हस्त मूले मणिबध्यतेऽत्र बन्ध बन्धने-हलश्चेति घञ् पु० इति श० चि० ॥

(३) गुम्फः पु० गुम्फन-ग्रन्थने-बाहोरलङ्कारे बाजूबन्द-इय भाणि इति श. चि.।

माला	स्त्री	हार
मुद्रा	स्त्री	अंगूठी
चूडा[१]	स्त्री	चूडा वा चौंक
कर्णिका	स्त्री	कर्णफूल
नूपर	न०	नूरे
कुण्डल	न०	कर्ण भूषण
अवतंस	न०	कर्ण भूषण

प्रसिद्ध वस्त्र वर्णन।

वस्त्र	न०	कपड़ा
दकूल	न०	दुपट्टा
कञ्चुक	न०	अङ्गरखा
अर्द्धोरुक्	न०	लांघा
कांचागल[२]	न०	कोट
पादावरण	न०	जुलावां

(नोट) १ चूड़ा स्त्री बाहु भूषणे भूषण मात्रे शिरः शिखा भूषणेषु चूडेतियादवः पिच्छिदादिभ्योऽङ् ॥

(नोट) २ काचिना मर्गेलानि सन्ति यस्मिन् वस्त्रे तत्का-चागिक वस्त्रं, कोट्टइति कुट्ट प्रतापे. उपोढ इत्याप्ताः ॥

हस्तावरण	न०	दस्ताने
कुचावरण	न०	चोली
पीठावरण	न०	मेजपोश
आतपत्रम्-आतपच्छत्रम्	न०	छाता
कौपीन	न०	लिङ्गोट लिङ्गोटी
कटिवस्त्र	न०	कांएच
हस्त वस्त्र	न०	रुमाल
पट्टवेश्म	न०	खेमा-तम्बू
वितान	न०	चन्दवा
शतरञ्ज[1]	न०	शतरञ्ज
कौशेय	न०	रेशमी कपड़ा
आस्तरण	न०	बिछौना
उपधान	न०	सिराना
उत्तरीय	न०	स्त्रियों के सिरका कपड़ा
उष्णीष	पु०	पटका
निचोल	पु०	चोला-कुर्त्ता
पादगाम	पु०	पजामा

(१) शतं जनान् रञ्जयतीति यत् वस्त्रं तत्। शतरञ्ज क्रीडायामप्येवं वाक्यम् अत्रतु प्रसङ्गात् सप्तानां रङ्गानां समाहारः। सप्तरङ्ग त्रि-शतरञ्जीति॥

[1] नासिका शोधक	पु०	रुमाल
कम्बल	पु०	कम्बल
[2] गलबन्ध	पु०	गुलूबन्द
शाटिका	स्त्री	धोती
जवनिका	स्त्री	कनात
शय्या	स्त्री	सेज
[3] शाणी	स्त्री	सणका कपड़ा
मेखला	स्त्री	तड़ागो
[4] उर्णा—उर्ण पदिका	स्त्री	पट्टी

प्रसिद्ध धान्य वर्णन ।

गोधूम्र	न०	गेहूं
[5] रूक्षान्न	न०	बाजरा-ज्वार—मक्की
चणक	पु०	छोले

(नोट) १ नासिकां शोधयनीतितथोक्तः ।

(२) गलस्य कण्ठस्य बन्धस्तथोक्तः निकटाई ॥

(३) स्त्री शणसूत्रमयी पट्टिका तत्तुल्यानि वस्त्राणिच इति शा० चि० । (४) ऊर्णा तुमप कोम ।

(५) क्षुद्रान्नम् ।

व्रीहि	पु०	चावल
माष	पु०	मांह
मुद्ग	पु०	मूंग
मसूर	पु०	मसर
यव	पु०	जौ
कलविङ्क	पु०	इन्द्र जौ
श्रावणिक	पु०	सांवक
फलिनी[1]	स्त्री०	कङ्गनी

शाक वर्णन

कन्दल	न०	गन्दल
गृञ्जन	न०	गाज़र
सर्षपशाक	न०	सरूं का साग
सर्षपकन्द	न०	शल्गम
सौभाञ्जन	न०	सुवांजना
वृन्ताक[2]	न०	बैंगन
लसन[3]	न०	लसन-थोम

(नोट) १ वृताङ्ककोमलंपथ्यं कुपथ्यंबदराफलम् ।

(२)— प्रियङ्गुफलिनीफलिनीति कोशः ।

(३) लसनं-पलाण्डुः गोजिह्वा शलोध्रम्; सर्षपकन्दम्-गृञ्जनं

कन्द	न०	कचालू
मृणाल	न०	भेंह
शलीन्ध्र	न०	खुम्बी
शमिफल	न०	शङ्कर
रम्भाफल	न	केले की फली
त्रिफल	त्रि०	त्रिफला
काञ्चनार	पु०	कचनार
पलाण्डु		पिआज़
अलाबू	स्त्री०	कद्दू
मूलिका	स्त्री०	मूली
गोजिह्वा	स्त्री०	गोबी
शिखरिणी	स्त्री०	क(ढ़ी) ढ़ी
यवागू	स्त्री०	खिचरी

यद्यपि शाकानां माघे मूलिकायाश्च भक्षणे निषेधः, तथापि मुख्यगौणयोर्मुख्ये व्यवहारः, इति वाक्यं पुरस्कृत्याद्ययोः पलाण्डुलशुनयोर्द्वयोर्भक्षणे सर्वथा निषेधस्तयोर्गुणप्राधान्यादाप्तवाक्याच्चेति दिक् ॥

(१)—त्रयाणां हरीतकी-आमलक-कलिद्रुमाणां फलानां समाहारस्तत्,यस्य माता गृहे नास्ति तस्य माता हरीतकीति वैद्याचार्य्यः ॥

नोट२—शिखरिणी-स्त्री-रसाला प्रभेदे यथा,गव्यमावर्त्तितं दुग्धं

रस वर्णन ।

लवण	न०	लून
लवङ्ग	न०	लौङ्ग
दाड़िम फल	न०	अनारदाना
जीरक	पु०	जीरा
शुष्कशलाटु	पु०	आम चूर
(इ) एला	स्त्री०	इलायची
राजिका	स्त्री०	राई ओड़
मरीचिका	स्त्री०	मिरच
हरिद्रा	स्त्री०	हल्दी
[1] शुण्ठि	स्त्री०	सुण्ठ (ढ)
[2] कृष्ण मरीचिका	स्त्री०	काली मिरच

निबद्धं दधिमाहिषमेकी कृत्यपदे घृष्टं शुभ्रशर्करयासमम्-एलालवङ्ग कर्पूर मरीचैश्चसमन्वितं नाम्नाशिखरिणी कुर्याद्रुचिं सकलवल्कर्मा, इति श. चि. ॥

१ – शुण्ठ्यास कफम् ॥ अथ हिंगुधान्यञ्च प्रसिद्धम् ॥

२—एवं रक्तमरीचि कऽपि किंबहुना ॥

—:-०-:—

गृह वर्णन ।

गृह	न०	घर
इष्टिका गृह	न०	ईंटों का घर
आमेष्टका गृह	न०	कच्चो ईंटों का घर
मृत्तिका गृह	न०	मट्टी का घर
काष्ठ गृह	न०	लकड़ का घर
प्रकोष्ठ	न०	कोठा कमरा
भित्ति	स्त्री०	दिवार
कपाट	त्रि०	किवाड़-या-फट्टा
अर्गल	न०	हुरका
वातायन	न०	रोशनदान
अट्टालिका	स्त्री०	अटारी-माड़ी
कुट्टिम	पु०	फर्श
सौपान	न०	सीढ़ा
जळस्रोतृ	पु०	परनाला
गृहिणी	स्त्री०	स्त्री
दुहि (तृ) ता	स्त्री०	लड़की
अपत्य	न०	पुत्र
उपमा (तृ) ता	स्त्री०	दाई
दासी	स्त्री०	नौकरानी

महानस	न०	बावर्ची खाना
पौरोगव-सूद	पु०	बावर्ची-मेहरा
चुल्लि[1]	स्त्री०	चुल्हा
इन्धन	न०	लकड़
पानपात्र	न०	प्याला
कांसपात्र	न०	कांए का वर्त्तन
पैतलपात्र	न०	पित्तल का वर्त्तन
लोहपात्र	न०	लोह का बर्त्तन
भ्राष्ट्र[2]	पु०	कड़ाई
कमण्डलु	पु०	गड़वा
कलश	पु०	गागर
घट	पु०	घड़ा (रा)
कंस[3]	पु०	गिलास
स्थाली	स्त्री०	वलटोई-देग

(नोट) १ चुद्यतेऽत्राग्निर्वा इन् प्रत्ययः ।

(२) भ्राष्ट्रः–अम्बरीषं चणकादि भर्जन पात्रस्य-खारर तान्हे

इ. श. चि. ॥

(३) कंसं चा प्राणिनि । कंसोऽस्त्री पानभाजनम् । प्राणि-

नि तु कंसो नाम कश्चिद्राजा ॥

दर्वि	स्त्री०	करछी
गोधूम्र चूर्ण	न०	गेहूं का आटा
झर्झरिका[1]	स्त्री०	रोटी
सूप	पु०	दाल
प्रातराश्य	न०	लुकमा—छाख वेला
आहार	पु०	खुराक
आज्य—घृत	न०	घी
तैल	न०	तेल
केश शोधिनी	स्त्री	कंघी
अञ्जन	न०	सुरमा
कज्जल	न०	कज्जल
मलिनी[2]	स्त्री	रजोवती स्त्री
स्नान	न०	न्हाना
फेनिल[3]	पु०	साबुन
क्षार	पु०	खार—सज्जी

(नोट) १ झर्झरिका स्त्री रोटिका विशेषे यथा धूमश्री रचिता रोटी प्रोक्ता झर्झरिका बुधैः ॥ इ. श. च. ॥

(२) मलिनी स्त्री रजस्वलायां नार्याम् ऋतुमत्याम् । मलोऽस्त्यस्याः अत इनिठनो ॥ इ. श. चि. ॥

(३) फेनोऽस्या अस्मिन् वास्ति फेनादिलच्चेतिचकारात् इलच् फेनिलो रीठाया मपीति श. चि. ॥

प्रक्षालन	न०	धोना
मकरन्द	पु०	अ(इ) तर
रङ्ग काष्ठ	न०	पलङ्ग
मञ्च	पु०	मञ्जा—खटरा
सूचिका	स्त्री	सुई
सूत्र गुटिका	स्त्री	गाली धागे की
तर्कु	स्त्री	चरखा
पेषिणी	स्त्री	चक्की
उलूखल	न०	उखली
मुसल	पु०	मोला
शूर्प	न०	छज
मार्जनी	स्त्री	बुहारी
चालनी	स्त्री	छारनी
चुर्क्रिका	स्त्री	चङ्गेर
कुण्डिका	स्त्री	कुण्डी—दंवरी
दण्ड	पु०	दण्डा
वस्तु	न०	आम चीजें

(नोट) १ चार्गयां चक्रव्यथने चक्रग्यो रुच्चोपधाया इति रक इ. बा. वि. ॥

संबन्धि वर्णन

प्रपितामह	पु०	परदादा
पितामह	पु०	दादा
जनक	पु०	पिता
पित्रव्य	पु०	चाचा
पित्रव्यज	पु०	चाचा का पुत्र चचेरा
भ्रा (तृ) ता	पु०	भाई
सहोदर	पु०	सगा भाई
भगिनी पति	पु०	भोनैया
भागनेय	पु०	भाणजा
मातुः स्वसृपति	पु०	मासर
श्वशुर	पु०	सौरा
श्याल	पु०	साला
जामा (तृ) ता	पु०	दामाद
सजातीय	पु०	शरोक
सुत्पत्र	पु०	धर्मपुत्र
मातामह	पु०	नाना
मातुल	पु०	मामा
मातामही	स्त्री०	नानी
मातुलानी	स्त्री०	मामी

प्रपितामही	स्त्री०	परदादो
पितामही	स्त्री०	दादो
मा (तृ) ता	स्त्री०	माँए
पित्रव्यस्त्री	स्त्री०	चाचो
पित्रव्यजजाया	स्त्री०	चाचे के पुत्र को स्त्री
भगिनी	स्त्री०	भैंन
मातृ स्व(सृ) सा	स्त्री०	मासी
श्वसुराणी	स्त्री०	सास
भार्य्या-जाया	स्त्री०	स्त्री०
सपत्नी	स्त्री०	सौतली-सौकन
वधू, स्नुषा	स्त्री०	नूं-नईपरनी

संख्या वर्णन ।

एक (ए)	त्रि०	एक
द्वि (द्वि०)	त्रि०	दो

(नोट) १ एवं सहोदर जाया-भ्रातृजाया-इयालकजाया ॥

(नोट) २ विशेष्यस्योहयालिङ्गंविभक्ति वचनाःविच ताम्येव प्रयोज्यानि विशेषणस्येष्वपि । यथा—एकःपुरुषः—एकास्त्री—एकं कुलं—एकं रूप्यकम् एकं पणकमित्यादिः । आपेच शुक्लयजुर्वेद

संहितायाम् । अ० १७ मेधातिथिऋषिःपनिच्पृ द्विकृतिच्छन्दः, अग्निर्देवता, इमामेअग्नइष्टकाः धेनवः सन्त्वेकाच दशचदशचशतञ्च सहस्रञ्च सहस्रञ्चायुतञ्च नियुतञ्चप्रयुतञ्चार्बुदञ्च न्यर्बुदञ्चस मुद्रश्चमध्यञ्चान्तश्चपरार्द्धश्चैताः ऽअग्नऽइष्टकाधेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिंल्लोके । एवं सर्वत्र ॥ गणित विद्यायामेषः सङ्ख्या क्रमः, एकं (१) दशं (१०) शतञ्चैव (१००) सहस्रं १०००) अयुतंतथा (१००००) लक्षञ्च (१०००००) नियुतञ्चैव (१००००००) कोटिः (१०००००००) अर्बुदमेव च (१००००००००) वृन्दः (१०००००००००) खर्वः १००००००००००) निखर्वश्च (१००:०००००००००) शंखः (१०००००००००००००) पद्मञ्च (१००००००००००००००) सागरः (१००००००००००००००००) अन्त्यं (१०००००००००००००००० मध्यं (१००००००००००००००००००) परार्द्धञ्च (१०००००००००००००००००० दशवृद्ध्यायथाक्रममिति । केचितु० [परार्द्धं] न० ब्रह्मणयुषऽर्द्धं, यथा, निजन० तस्यमानेन आयुर्वर्षशतं स्मृतम्, तन्नामाख्यं तदर्द्धञ्च परार्द्धमभिधीयते । १० वि० पु० । हरये, परस्य ब्रह्मणोर्द्धं स्थानंतस्मिन् । परब्रह्मं पक्ष्यते । दशमध्यसंख्यायां [१००००००००००००००००००० स्थानात् स्थानं दशगुणमेकस्माद्गुणिने द्विजतत्तोष्टादशमेभागेपरार्द्धमभिधीयते । इ० श० चि० ॥

—oo;o;oo—

त्रि (ब०)	त्रि०	तीन
चतुर् (ब०)	त्रि०	चार
पञ्चन् (ब०)	”	पांच
षट् (ब०)	”	छे
सप्त (ब)	”	सात
अष्टन् (ब)	”	आठ
नव (नत्र)	”	नौ
दश (ब०)	”	दस
विंशति	स्त्री०	बीस
त्रिंशत्	स्त्री०	तीस
चत्वारिंशत्	स्त्री०	चालीस
पञ्चाशत्	स्त्री०	पचास
षष्टि	स्त्री०	साठ
सप्तति	स्त्री०	सत्तहर
अशीति	स्त्री०	अस्सी
नवति	स्त्री०	नव्वे
शत[१]	न०	सौ

(नोट) १ शतादिपुनर्युतः पुंसिचं । अयं शतः, इदंशतमित्यादिः । लक्षाकोटिः स्त्रियाम् । इयंलक्षा, इयंकोटिः । वालक्षानियुतञ्चतदित्यमरः । क्लीवेपिलक्षम् । शंकुपुंसि । सहस्रः क्वचित्, इ० सि० कौ० ॥

सहस्र	न०	हजार
लक्ष्य	न०	लाख
कोटि	स्त्री०	करोड़
पद्म	न०	पद्म

परिमाण वर्णन ।

माष	न०	मासा
कर्ष	न०	तोला
पल	न०	छटाक
कुडव	पु०	पाउभर
प्रस्थ	पु०	सेर
आढक	न०	४ सेर
द्रोण	प०	३२ सेर
शूर्प	पु०	१ मन २४ सेर
खारी	स्त्री०	२ मन १६ सेर
द्रोणि	स्त्री	३ मन ८ सेर
तुला	स्त्री०	तराजु

(नोट) १ अत्रापिनास्ति नियतलिङ्गाविशेष्य विशेषणतया लि
बहुना ॥

स्वदेश वर्णन

हिन्दुस्थान[१]	न०	हिन्दुस्तान
पञ्चनद[२]	पु०	पञ्जाब
सिन्धुः	पु०	सिन्ध सागर—अटक
सेतु	पु०	पुल
स्तम्भ	पु०	थम्ब
पोत	पु०	जहाज
नौ	स्त्री	बेरी
नावक	पु०	मल्लाह
तट	पु०	कनारा
वासस्थान	न०	घाट

इति जनार्द्दन कोषस्य प्रथमो भागः सम्पूर्णः, सोऽयं सिन्धु देशीयडेराख्यवास्तव्यधन्यधनकुलावतं स श्रीयुत पण्डित टिक्कणलालात्मजेन पं० भगवद्दत्त शर्मणा निर्मितः ।

ॐ शान्तिः ३ ।

(१) हिन्दुस्थानमिति पदं भ्रष्टं प्रतीयेत न क्वाप्यस्य विशेषाख्यानमलौकि परमार्य्याख्यानमार्यस्थानञ्च सर्वत्र सुप्रसिद्धम् ॥

(२) शतद्रूर्विपाशेरावतीवितस्ताचन्द्रभागेति पञ्चनद्यो यत्र स पञ्चनदोदेशः ॥

पुस्तक मिलने का पता—

पं० भगवद्दत्त शर्म्मा

A.S.M. स्कूल भूपालवाला

जिला स्यालकोट ।

अथार्य्यस्थानान्तर्गतनदीपुञ्जमाङ्गलिक श्लोकमाह। गङ्गासिन्धुसरस्वतीचयमुनागोदावरीनर्मदा कावेरीसरयूर्महेन्द्रतनयाचर्मण्वतीवेदिका: क्षिप्रावेत्रवतीमहासुरनदी ख्याताचयागण्डकी पूर्णापुण्यजलैःसमुद्रसहिताःकुर्वन्तुनोमङ्गलम् ॥

ओं शान्तिः ३ ॥